डॉ० विष्णु शास्त्री ' सरल '

जन्म - स्थान - चम्पावत (उत्तराखण्ड)
पिता का नाम - स्मृतिशेष जीवानन्द भट्ट
माता का नाम - स्मृतिशेष मनु देवी
मोबाइल - 9411347934

ईश्वर ने जीवन दिया , मानव को अनमोल।
क्यों वह इसमें व्यर्थ ही , गरल रहा है घोल।
गरल रहा है घोल , सदा मिथ्या अपनाता।
करता अत्याचार , बाद में है पछताता।
मानव! कर सत्कर्म, स्वस्थ जब तक तन नश्वर।
देता है परिणाम , कर्म का सबको ईश्वर।।

****

पहचानो अधिकार को , याद रहे कर्त्तव्य।
विद्या से दिखता सहज , सबको निज गंतव्य।
सबको निज गंतव्य , स्रोत सुख का मिल जाता।
आजीवन समृद्धि , शांति फिर प्राणी पाता।
भौतिक धन से श्रेष्ठ , सदा विद्या को मानो।
बनो विनम्र - सुशील , स्वयं को भी पहचानो।।

****

विचलित होना है नहीं , कर्म करें अविराम।
होगा उसका एक दिन , प्राप्त सुखद परिणाम।
प्राप्त सुखद परिणाम, शांति मन को फिर देगा।
निश्चित शीघ्र थकान , कर्म की वह हर लेगा।
जपें राम का नाम , कर्म करते नित नियमित।
आएँगे ही विघ्न , नहीं उनसे हों विचलित।।

****

आगे हर पल सोचकर , कदम बढ़ाना मित्र।
किसका अब विश्वास हो , दुनिया बड़ी विचित्र।
दुनिया बड़ी विचित्र , किसी की कभी न सुनती।
मात्र स्वार्थ का जाल , निरंतर ही है बुनती।
सुध खोकर दिन - रात , फिरो मत भागे - भागे।
ऐसा करो प्रयत्न , मिले कुछ हितकर आगे।।

****

जिनके प्राणोत्सर्ग से , बची देश की लाज।
उन्हें याद सम्मान से , करते हैं सब आज।
करते हैं सब आज , गर्व अपने वीरों पर।
होती जय-जयकार , चतुर्दिक फिर से घर - घर।
कौन सकेगा भूल , शौर्य - ़साहस को उनके।
जीता भारत युद्ध , , कारगिल बल पर जिनके।।

****

जीवन मिला मनुष्य का , करें सदा उद्योग।
आजीवन होता रहे , हर पल का उपयोग।
हर पल का उपयोग , समय पर चेतें सारे।
बाधाएँ हों शीघ्र , राह से स्वत: किनारे।
रहे निरंतर स्वस्थ , सभी का जग में तन - मन।
जाने पाए व्यर्थ , नहीं यह दुर्लभ जीवन।।

****

पाकर भौतिक सम्पदा , करें नहीं अभिमान।
क्षण - क्षण परिवर्तन यहाँ , रहे सदा यह ध्यान।
रहे सदा यह ध्यान , किसी को नहीं सताएँ।
उस धन से हर भाँति , भलाई करते जाएँ।
मिलता है सुख - चैन , किसी का कष्ट मिटाकर।
युग - युग तक हो नाम , श्रेष्ठ यह जीवन पाकर।।

****

हो जाता है व्यक्ति का , अंगदान से नाम।
जब तक तन में प्राण हैं , करें नेक यह काम।
करें नेक यह काम , अन्य जीवन पा जाए।
मरणोत्तर भी नाम , नहीं धूमिल हो पाए।
इस जीवन में मात्र , एक अवसर आता है।
मानव तन कृतकृत्य , जान लें हो जाता है।।

****

आपाधापी है मची , धरती पर हर ओर।
बाधित करता जा रहा , सदा व्यर्थ का शोर।
सदा व्यर्थ का शोर , अर्थ कुछ निकल न पाता।
वातावरण अशांत , समूचा होता जाता।
बढ़ते जाते आज , अधम - अज्ञानी - पापी।
कृपा करें जगदीश , क्षीण हो आपाधापी।।

****

उन्नति करता ही रहे , अपना भारत देश।
जन - मन में सद् भाव हो , नहीं कहीं हो क्लेश।
नहीं कहीं हो क्लेश , एकता बढ़ती जाए।
जाति - धर्म का प्रश्न , नहीं अब उठने पाए।
हे परमेश्वर ! शीघ्र , सभी को देना सन्मति।
मिले उन्हें निज राह , किसी की रुके न उन्नति।।

****